बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना

वर्ष 2017 का मॉडल प्रश्न पत्र एवं उत्तरमाला

PHILOSOPHY

Set-II

MODEL PAPER - II

कुल प्रश्नों की संख्या : ४० + १० + ५ = ५५

Total No. of Questions : 40 + 10 + 5 = 55

कुल मुद्रित पृष्ठों की संख्या : २४

Total No. 1 of Printed Pages : 24

PHILOSOPHY

A.-PHL. (OPT)

समय : ३ घंटे १५ मिनट] [पूर्णांक : १००

Time : 3 Hours 15 Minutes] [Marks : 100

परीक्षार्थी के लिये निर्देश :

Instructions to the candidate :

1. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

   Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.
2. दाहिनी ओर हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।

   Figures in the right hand margin indicate full marks.
3. परीक्षार्थी प्रत्येक उत्तर के साथ भाग संख्या, खण्ड संख्या और प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

   Write Section number, Group number and Question number with every answer.

निर्देश : इस प्रश्न-पत्र में दो भाग-भाग-I एवं भाग-II हैं। भाग-I में खण्ड-अ एवं भाग-II में खण्ड-ब एवं खण्ड-स हैं।

भाग-I : भाग-I के खण्ड-अ के प्रश्न वस्तुनिष्ठ प्रकार के हैं। इस खण्ड के प्रश्न संख्या १ से ४० तक प्रत्येक १ अंक का है।

भाग-II : भाग-II के सभी प्रश्न गैर-वस्तुनिष्ठ हैं। भाग- II के खण्ड-ब के प्रश्न लघु उत्तरीय प्रकार के हैं। सभी १० प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न ३ अंक का है। भाग- II के खण्ड-स के प्रश्न दीर्घ उत्तरीय प्रकार के हैं। सभी ५ प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न ६ अंक का है।

***Instructions* :**

This paper consists of two Sections - Section - I and II. Section - I consists of Group - A and Section - II consists of Group-B & Group - C.

***Section*-I :** Group A of Section - I are Objective Type Questions. In this group Question Nos. 1 to 40 carry 1 mark each.

***Section*-II :** All Questions of Section - II are Non-Objective Type. Group -B of Section-II are Short Answer Type questions. Answer all 10 questions. Each question carries 3 marks. Group-C of Section-II are Long Answer Type Questions. Answer all 5 questions. Each question carries 6 marks.

Model Paper - II

भाग- I

Section - I

खण्ड-अ

Group - A

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(Objective Type Questions)

सभी 40 प्रश्नों के उत्तर दें। सही उत्तर का चयन करते हुए प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दें:

40 × 1 = 40

Answer all the questions. Answer each question by selecting the correct answer

40 × 1 = 40

1. सांख्य दर्शन के प्रवर्तक हैं-

(a) गौतम (b) कपिल

(c) पतंजलि (d) रामानुज

The founder of Sankhya philosophy is-

(a) Gautam (b) Kapil

(c) Patanjali (d) Ramanuj

2. स्याद्वाद है-

(a) ज्ञान शास्त्रीय सिद्धान्त (b) तत्वशास्त्रीय सिद्धान्त

(c) दोनों (d) कोई नहीं

Syandvada is-

(a) An epistemological Theory (b) a metaphysical theory

(c) both a & b (d) None of these

3. बुद्ध के चतुर्थ आर्य सत्य को कहते हैं-

(a) दुःख समुदाय (b) दुःख है

(c) दुःख निरोध मार्ग (d) दुःख निरोध

The fourth Noble Truth of Buddha is called-

(a) Dukh Samudaya (b) Dukh

(c) Dukh Nirodh Marg (d) Dukh Nirodh

4. न्याय के अनुसार प्रत्यक्ष के लिए आवश्यक है-

(a) इन्द्रिय (b) विषय

(c) सन्निकर्ष (d) सभी

According Nyaya, it is essential for perception-

(a) Sense organ (b) Object

(c) Contact (d) All the above

5. प्रतीत्य समुत्पाद सिद्धान्त का आधार है-

(a) धार्म सिद्धान्त (b) नैतिक सिद्धान्त

(c) कारण-कार्य सिद्धान्त (d) इनमें से कोई नहीं

The basis of the Dependent Origination-

(a) Religious theory (b) Moral theory

(c) Causation theory (d) None of the above

6. स्याद्वाद सिद्धांत का संबंध है-

(a) जैन दर्शन (b) बौद्ध दर्शन

(c) दोनों (d) वेदान्त

The theory of Syadvada is related to-

(a) Jaina philosophy (b) Buddhist philosophy

(c) Both the above (d) Vedanta

7. **सत्ता अनुभवमूलक है, यह कथन है-**

(a) बर्कले (b) लॉक

(c) काण्ट (d) ह्यूम

'Reality is Experienced-based'-this statement relates to -

(a) Berkeley (b) Locke

(c) Kant (d) Hume

8. ऋत् की अवधारणा का वर्णन है-

(a) वेद में (b) उपनिषद में

(c) पुराण (d) इनमें से कोई नहीं

The concept of Rta is explained in-

(a) The Vedas (b) Upanishadas

(c) Purana (d) None of these

9. परम पुरुषार्थ है-

(a) काम (b) अर्थ

(c) धर्म (d) मोक्ष

Which is the highest Purusartha-

(a) Kama (b) Artha

(c) Dharma (d) Moksha

10. निष्काम कर्म का मूल सिद्धान्त है-

(a) सुख के लिए (b) कर्तव्य के लिए

(c) शुभ फल प्राप्ति के लिए (d) इनमें से कोई नहीं

The theory of Nishkaama Karma (non-attached actions) is -

(a) For pleasure (b) for duty sake

(c) to attain good results (d) None of these

11. 'मैं सोचता हूँ, इसलिए मैं हूँ' कथन है-

(a) देकार्त (b) स्पिनोजा

(c) काण्ट (d) इनमें से कोई नहीं

'I think therefore I am', the statement belongs to-

(a) Descartes (b) Spinoza

(c) Kant (d) None of these

12. निम्न में से कौन नास्तिक है-

(a) न्याय दर्शन (b) सांख्य दर्शन

(c) चार्वाक (d) योग दर्शन

Who among the following is heterodox:-

(a) Nyaya Philosophy (b) Samkhya

(c) Charvak (d) Yoga

13. व्यापार नीतिशास्त्र अध्ययन है-

(a) मूल्यों का (b) आदर्शों का

(c) लाभ का (d) नैतिकता का

Professional Ehics is the study of:-

(a) Values (b) Ideals

(c) Profit (d) Morality

14. भौतिकवाद के अनुसार परम सत्ता है-

(a) वृक्ष (b) जड़

(c) चेतना (d) इनमें से कोई नहीं

According to Materialism, the Ultimate Reality is-

(a) Plants (b) Matter

(c) Consciousness (d) None of these

15. समीक्षात्मक किसका सिद्धान्त है ?

(a) काण्ट (b) लॉक

(c) बर्कले (d) इनमें से कोई नहीं

The founder of Criticism is-

(a) Kant (b) Locke

(c) Berkeley (d) None of these

16. अनुभववादी कौन है ?

(a) देकार्त (b) स्पिनोजा

(c) लॉक (d) इनमें से कोई नहीं

Who among the following is an Empirisist Philosopher?

(a) Descartes (b) Spinoza

(c) Locke (d) None of these

17. कौन आस्तिक दर्शन है ?

(a) जैन (b) वेदान्त

(c) बौद्ध (d) इनमें से कोई नहीं

Who among the following is an Orthodox Philosophy?

(a) Jaina (b) Vedanta

(c) Bauddha (d) None of these

18. इनमें से कौन बुद्धिवादी है ?

(a) लॉक (b) बर्कले

(c) देकार्त (d) इनमें से कोई नहीं

Who among the following is a Rationalist Philosopher?

(a) Locke (b) Berkeley

(c) Descartes (d) None of these

19. दर्शन शब्द की उत्पत्ति निम्न में से किस धातु से हुई है ?

(a) कृ धातु से (b) दृश् धातु से

(ब) लृ धातु से (d) इनमें से कोई नहीं

The term *darshan* is originated from the root verb:-

(a) Kri (b) drish

(c) Lri (d) None of these

20. सर्वोच्च शुभ किसे कहा जाता है?

(a) सापेक्ष शुभ को (b) निरपेक्ष शुभ को

(c) सापेक्ष और निरपेक्ष शुभ को (d) इनमें से कोई नहीं

The Highest Good is:-

(a) Relative Good (b) Categorical Good

(c) Both a & b (d) None of these

21. निम्नलिखित में कौन दण्ड के सिद्धान्त हैं ?

(a) निरोधात्मक (b) सुधार का सिद्धान्त

(c) प्रतिकारात्मक सिद्धान्त (d) ये सभी

Which of the following is a theory of Punishment?

(a) Deterrent Theory (b) Reformative Theory

(c) Retributive Theory (d) All of these

22. 'ऐसे ईस्ट परसिपी' किसका सिद्धान्त है?

(a) लॉक (b) बर्कले

(c) देकार्त (d) इनमें से कोई नहीं

Who gave the theory *esse est percipi*

(a) Locke (b) Berkeley

(c) Descartes (d) None of these

23. ब्रह्मसूत्र की रचना किसने की

(a) वादरायण (b) शंकर

(c) गौतम (d) इनमें से कोई नहीं

Brahmsutra is authored by

(a) Vadrayan (b) Sankar

(c) Gautam (d) None of these

24. अनुभववाद के समर्थक हैं-

(a) लॉक (b) बर्कले

(c) ह्यूम (d) इनमें से सभी

Who among the following supports Empiricism?

(a) Locke (b) Berkeley

(c) Hume (d) All of these

25. किसके अनुसार 'गीता माता' है-

(a) बाल गंगाधर तिलक (b) विनोबा भावे

(c) श्री अरविन्दो (d) महात्मा गाँधी

Who asserts the Gita as mother?

(a) Bal Gangadhar Tilak (b) Binoba Bhave

(c) Sri Aurobindo (d) mahatma Gandhi

26. अनेकान्तवाद की आधारशिला है-

(a) नयवाद (b) स्याद्वाद

(c) मोक्षवाद (d) पुद्गलवाद

The foundation of Anekantvaad is:

(a) Nayavaad (b) Syadvaad

(c) Mokshavaad (d) Pudgalvaad

27. जैन दर्शन के २४वें तीर्थंकर कौन हैं-

(a) महावीर (b) ऋषभदेव

(c) पार्श्वनाथ (d) इनमें से कोई नहीं

Who is the 24th Tirthankar in the Jaina School?

(a) Mahavir (b) Rishabhdev

(c) Parshwanath (d) None of these

28. प्रतीत्यसमुत्वाद किसका सिद्धान्त है-

(a) वेदान्त (b) बौद्ध

(c) जैन (d) मीमांसा

The Theory of Dependent Origination belongs to:-

(a) Vedanta (b) Buddhism

(c) Jainism (d) Mimansa

29. लोक संग्रह का सिद्धान्त है-

(a) सुखवाद (b) सर्व कल्याणवाद

(c) पूर्णतावाद (c) ये सभी

The Theory of Lok Sangraha is-

(a) Hedonism (b) Theory for All Welfare

(c) Perfectionism (d) All the above

30. बुद्ध के अनुसार कितने आर्य सत्य हैं-

(a) दो (b) चार

(c) तीन (d) इनमें से कोई नहीं

The number of The Noble Truths according to Buddha is:

(a) Two (b) Four

(c) Three (d) none of these

31. अरस्तु के अनुसार कारण है-

(a) उपादान (b) आकारिक

(c) अन्तिम (d) इनमें से सभी

Cause, according to Aristotle is-

(a) Material (b) Formal

(c) Final (d) All of these

32. निम्न में कौन पुरुषार्थ नहीं है-

(a) अर्थ (b) काम

(c) धर्म (d) ईश्वर

Which of following is not Purushartha?

(a) Artha (b) Kaam

(c) Dharma (d) God

33. प्रथम आर्य सत्य है-

(a) दुःख है (b) दुःख का कारण

(c) आनन्द (d) इनमें से कोई नहीं

The first Noble Truth is-

(a) There is sufferin (b) There is cause to suffering

(c) There is pleasure (d) None of these

34. पूर्व स्थापित सामंजस्यवाद किसके द्वारा दिया है-

(a) देकार्त (b) स्पिनोजा

(c) लाइबनीज (d) इनमें से कोई नहीं

The theory of Pre-Eshtablished Harmony is given by-

(a) Descartes (b) Spinoza

(c) Leibnitz (d) None of these

35. जन्मजात प्रत्यय संबंधी सिद्धान्त का खंडन किया है-

(a) बर्कले (b) काण्ट

(c) लॉक (d) इनमें से कोई नहीं

Who among the following did refute the Innate Ideas?

(b) Berkeley (b) Kant

(c) Locke (d) None of these

36. वैशेषिक दर्शन के प्रणेता कौन हैं-

(a) महावीर (b) कणाद

(c) बर्कले (d) दुर्वासा

Who is the founder of Vaisesika Philosophy?

(a) Mahavir (b) Kanad

(c) Berkeley (d) Durwasa

37. किसके द्वारा प्राप्त ज्ञान सार्वभौम एवं अनिवार्य होता है-

(a) अनुभववाद (b) बुद्धिवाद

(c) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

Universal and necessary knowledge is claimed to attain in:

(a) Empiricism (b) Rationalism

(c) Both a & b (d) None of these

38. देकार्त है-

(a) बुद्धिवादी (b) अनुभववादी

(c) समीक्षावादी (d) इनमें से कोई नहीं

Descartes is:

(a) Rationalist (b) Empiricist

(c) Criticism (d) None of these

39. धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष है-

(a) योग के चार सोपान (b) कर्म सिद्धान्त

(ब) चार पुरुषार्थ (क) नैतिकता

Dharma, Artha, Kaam and Moksha are-

(a) Stages in Yoga (b) Law of Karma

(c) Four Purushartha (d) Morality

40. 'ज्ञान संश्लेषणात्मक अनुभवपूर्ण निर्णय है': किस सिद्धांत से संबंधित है-

(a) बुद्धिवाद (b) अनुभवाद

(c) समीक्षावाद (d) इनमें से कोई नहीं

'Knowledge is a synthetic judgement a priori'- relates to:

(b) Rationalism (b) Empiricism

(c) Criticism (d) None of these

भाग-II

खण्ड-ब

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

(Short Answer Type Questions)

सभी प्रश्नों के उत्तर दें : **10 × 3 = 30**

Answer All Questions : **10 × 3 = 30**

1. 'फिलॉस्फी' का शाब्दिक अर्थ क्या है?

   What is the literal meaning of the term 'Philosophy'?

2. भारतीय दर्शन में कितने आस्तिक सम्प्रदाय हैं ?

   How many schools are there in Orthodox Indian Philosophy?

3. पुरुषार्थ के संदर्भ 'काम' का क्या अर्थ है ?

   What is the meaning of Kaam in the context of Purushartha?

4. अनासक्त कर्म का क्या अर्थ है ?

   What is the meaning of Anaasakta Karma?

5. आर्य सत्य कितने प्रकार के हैं ?

   What are the types of Arya Satya or The Noble Truths?

6. अनुभववाद क्या है ?

What is Empiricism?

7. संकल्प स्वातंत्र्य का क्या अर्थ है ?

What is the meaning of Freedom of Will?

8. कारणता सिद्धांत से आप क्या समझते हैं ?

What do you understand by the Causal Principle?

9. चिकित्सा नीतिशास्त्र से आप क्या समझते हैं ?

What do you mean by Medical Ethics?

10. शिक्षा का मूल उद्देश्य क्या है?

What is the main objective of Education?

Group - C
(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)
(Long Answer Type Questions)

11. वैशेषिक के अनुसार द्रव्य की अवधारणा क्या है ?

What is the concept of Dravya according to Vaisheshika ?

12. शंकर के जगत का स्वरूप क्या है ? विस्तृत रूप से व्याख्या करें।

What is the nature of Jagat or world to Shankar ? Describe in detail.

13. सांख्य दर्शन के अनुसार प्रकृति त्रिगुणात्मक होती है। स्पष्ट कीजिए।

According to Sankhya philosophy the pracriti or nature is Trigunatmaka? Explain.

14. वस्तुवाद का परिचयात्मक वर्णन कीजिए।

Give an introduction of Realism.

15. व्यावसायिक नीति-दर्शन क्या है ?

What is Professional Ethic Philosophy.

-ANSWER-

1. (b)	2. (a)	3. (c)	4. (d)	5. (c)
6. (c)	7. (a)	8. (a)	9. (d)	10. (c)
11. (a)	12. (c)	13. (a)	14. (b)	15. (a)
16. (c)	17. (b)	18. (c)	19. (b)	20. (b)
21. (d)	22. (b)	23. (a)	24. (d)	25. (d)
26. (b)	27. (a)	28. (b)	29. (a)	30. (b)
31. (d)	32. (d)	33. (a)	34. (c)	35. (c)
36. (b)	37. (b)	38. (b)	39. (c)	40. (c)

-ANSWER-

1. 'फिलॉसफी' का शाब्दिक अर्थ है- ज्ञान के प्रति प्रेम।
2. भारतीय दर्शन में छः आस्तिक सम्प्रदाय हैं। इनके नाम इस प्रकार हैं-न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदान्त।
3. काम शब्द 'कृ' धातु से बना है, जिस कारण वह सभी क्रियाएँ जो की जाती है, वह काम है। परन्तु, पुरुषार्थ के संदर्भ में, मनुष्य की जैविक यौन- क्रियाओं को काम कहा जाता है।
4. अनासक्त कर्म वह है जिसमें फल की आशा निहित नहीं रहती है।
5. आर्य सत्य चार (४) प्रकार के हैं- (क) सर्वम् दुःखम् (ख) दुःख समुदाय (ग) दुःख निरोध (घ) दुःख निरोध मार्ग या दुःख निरोधगामिनी प्रतिवाद।
6. अनुभववाद, बुद्धिवाद का विरोधी सिद्धांत है जिसके अनुसार ज्ञान का स्त्रोत अनुभव है।
7. जब मनुष्य में इच्छा संघर्ष हो तथा उसका अपनी इच्छा से किसी एक चुनाव कर लेना संकल्प स्वातंत्र्य कहलाता है। यह नैतिकता का एक आधार है।
8. कारणता सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक घटना या कार्य का कोई-न-कोई कारण अवश्य होता है।
9. चिकित्सा नीतिशास्त्र, अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र की एक शाखा है जिसमें चिकित्सा संबंधी समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।
10. शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्ति के व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाना है।
11. वैशेषिक दर्शन में 'द्रव्य' को एक विशेष अर्थ में लिया गया है। द्रव्य वह है जो गुण और कर्म को धारण करता है। गुण और कर्म बिना किसी वस्तु या आधाार का नहीं रह सकते। इसका आधार ही द्रव्य कहलाता है।

    गुण और कम द्रव्य में रहते हुए भी द्रव्य से भिन्न हैं। द्रव्य गुणयुक्त है, किन्तु गुण और कर्म गुणरहित है। इन्हें गुणवान नहीं माना जा सकता। गुण सभी द्रव्यों में पाये जाते हैं, किन्तु कर्म सभी द्रव्यों में नहीं रहते। कर्म के लिए स्थान की आवश्यकता होती है। ससीम द्रव्य ही स्थान घेरते हैं, इसलिए ये कर्मयुक्त हैं। असीम द्रव्य दिक् में नहीं, इसलिए इन्हें गति या कर्म के लिए स्थान नहीं मिलता। अतः असीम द्रव्यों में कर्म नहीं पाया जाता।

वैशेषिक के अनुसार नौ प्रकार के द्रव्य पाये जाते हैं-(१) आत्मा (२) अग्नि (३) वायु (४) आकाश (५) जल (६) पृथ्वी (७) दिक् (८) काल और (९) मन।

उपर्युक्त नौ द्रव्य 'पंचमहाभूत' कहे जाते हैं। वे हैं- पृथ्वी, अग्नि, वायु, जल और आकाश। वैशेषिक दर्शन इसी पंचमहाभूत से विश्व का निर्माण मानता है। सभी भौतिक पदार्थ भूत ही है। वैशेषिक दर्शन द्रव्यों का वर्गीकरण ज्ञानात्मक आधार पर करते हैं। हमें पाँच इन्द्रियाँ हैं, जिसके द्वारा बाह्य जगत का ज्ञान होता है।

वैशेषिक द्रव्यों को नश्वर मानता है, किन्तु इसके परमाणु अनश्वर है। इन्हीं परमाणुओं से विश्व के सभी पदार्थ बनते हैं। इन परमाणुओं का प्रत्यक्ष नहीं होता है। इनका ज्ञान अनुमान द्वारा होता है।

भौतिक द्रव्यों का परमाणुओं की व्याख्या के लिये दिक् और काल को मानना आवश्यक है। इसीलिए वैशेषिक दर्शन में दिक् और कार्य को स्वतंत्र द्रव्यों के रूप में स्वीकार किया गया है।

मन एक आंतरिक इंद्रिय है। मन का प्रत्यक्ष नहीं होता। इसका ज्ञान अनुमान द्वारा होता है। इसके द्वारा सुख, दुःख, हर्ष, विषाद आदि आंतरिक अनुभूतियों का ज्ञान होता है। मन अविभाज्य है।

12. जगत् तथा परमसत् के विषय में विरोधापूर्ण औपनिषदिक विचारों में सामंजस्य लाकर शंकर जगत् की व्याख्या करते हैं-'ब्रह्म सत्य जगन्नमिथ्या।'

शंकर सत् तथा असत् की कसौटी के रूप में क्रमशः 'अनुवृत्ति' तथा 'व्यभिचार' को स्वीकार करते हैं। अनुवृत्ति का अर्थ 'त्रिकालबाधित' व्यापकता है जबकि व्यभिचार अनित्य तथा विशेष का द्योतक है। इस आधार पर एकमात्र सत्ता ब्रह्म की सिद्ध होती है, क्योंकि वह शाश्वत तथा व्यापक है जबकि परिवर्तनशील असत् सिद्ध होता है इसी कारण सत्कार्यवादी होकर भी शंकर जगत की व्याख्या 'सत्कार्यवाद' के आधार पर करते हैं।

रस्सी में साँप की प्रतीति का संदर्भ लेते हुए यह कहना उपयुक्त है कि जगत ब्रह्म पर अध्यासित सिद्ध होता है। चूँकि ज्ञान द्वारा 'अध्यास' का नाश होता है और 'अधिष्ठान' सत् रह जाता है। इसलिए ब्रह्म ज्ञान के बाद जगत की जगह ब्रह्म ही सत्रूप में स्पष्ट होता है।

जगत को मिथ्या कहने के बावजूद शंकर इसे आकाशकुसुम की तरह 'तुच्छ' तथा स्वप्निल वस्तुओं जैसी प्रतिभासिक सत्ता नहीं मानते हैं, परन्तु यह पारमार्थिक रूप से भी निरपेक्षतः सत्य नहीं है क्यांकि इसकी सत्ता विवर्त जैसी है। यह व्यावहारिक स्तर पर सत्य है।

शंकर इसे सद्असद्विलक्षण या अनिर्वचनीय कहते हैं। ब्रह्म के साथ इसका तादात्मय है क्योंकि यह उससे न तो भिन्न है न अभिन्न है।

व्यावहारिक स्तर पर जगत को मिथ्या नहीं कहा जा सकता तथा पारमार्थिक स्तर पर इसे मिथ्या सिद्ध करने की आवश्यकता ही समाप्त हो जाती है।

13. प्रकृति विश्व का मूल कारण है। यह असीम, अनादि एवं अनंत है। विश्व के सभी पदार्थों का कारण प्रकृति है तथा स्वयं अकारण एवं स्वतंत्र है। यह 'प्रधान' और 'एक' है। यह देश और काल की सीमा से परे है। यह नित्य, अचेतन, विकासशील, वास्तविक, सतत् क्रियाशील है। इसका ज्ञान प्रत्यक्ष द्वारा नहीं बल्कि गुणों के आधाार पर अनुमान द्वारा होता है।

गुणों की साम्यावस्था को ही प्रकृति कहा गया है, इसलिए त्रिगुणमयी है। गुण तीन प्रकार के हैं-

(१) सत्वगुण-यह हल्का, लघु, प्रकाश तथा आनंद का कारण है। सफेद रंग वाले इसी गुण से मनुष्य में सादगी, सद्विचार एवं सच्चरित्रता की भावना उत्पन्न होती है। वस्तु को प्रतिबिम्बित करने की क्षमता तथा उनमें उधर्वगति प्रवृत्ति इसी के कारण है।

(२) रजसगुण-यह गति का तत्व है, जिससे चंचलता, सक्रियता तथा उत्तेजना आया करती है। सभी प्रकार की दुःखात्मक अनुभूतियाँ इसी के कारण हैं। इसका रंग लाल है।

(३) तमस्गुण-यह अलंकार, अज्ञान तथा निष्क्रियता का प्रतीक है। यह गुरु है तथा इसका रंग काला है।

ये तीनों गुण हमेशा सक्रिय रहते हैं। जब प्रलय की अवस्था आती है तो तीनों अलग-अलग हो जाते हैं, लेकिन गतिशीलता बनी रहती है, इसे 'स्वरूपपरिणाम' कहते हैं। जब प्रकृति के सभी आपस में सक्रिय होकर एक-दूसरे पर अधिापत्य जमाने का प्रयास करने लगते हैं तब जो परिवर्तन होता है। उसे 'विरुप परिणाम' कहते हैं। तीनों गुण परस्पर विरोधी होते हुए भी विश्व की व्याख्या के लिए उसी प्रकार आवश्यक है, जिस प्रकार दीया, बाती तथा तेल प्रकाश के लिए आवश्यक है।

14. वस्तुवाद ज्ञानशास्त्रीय सिद्धांत है। वस्तुवाद की यह विशेषता है कि ज्ञेय और अस्तित्व के लिए ज्ञाता से पूर्णतः स्वतंत्र है। इस प्रकार वस्तुवाद वह ज्ञानशास्त्रीय सिद्धांत है जो ज्ञान के विषय को ज्ञाता से स्वतंत्र मानता है। यह किसी भी पदार्थ को अपने अस्तित्व के लिये ज्ञाता या मन पर आश्रित नहीं मानता है। विश्व के प्रत्येक पदार्थ का ज्ञाता का स्वतंत्र अस्तित्व होता है। इसकी यह मान्यता है कि ज्ञान के द्वारा ज्ञात पदार्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता। जो पदार्थ जिस रूप में रहता है उसका ज्ञान उसी रूप में होता है। इस प्रकार वस्तुवाद के अनुसार वस्तुओं का स्वरूप और ज्ञान ज्ञाता से स्वतंत्र है।

वस्तुवाद के मुख्य रूप से दो प्रभेद माने गये हैं-(क) लोकप्रिय वस्तुवाद एवं (ख) दार्शनिक वस्तुवाद।

इन दोनों में लोकप्रिय वस्तुवाद जनसाधाारण का मत है। सर्वसाधारण का यह सिद्धांत होने के कारण इसे कभी-कभी Common Sense Realism भी कहा जाता है।

लोकप्रिय वस्तुवाद को दार्शनिक आधार पर संतोषप्रद नहीं माना गया है। स्वप्न, विभ्रम आदि भ्रांति है जिनमें कभी-कभी अयथार्थ हमें वास्तविक जान पड़ता है। विभ्रम की अवस्था में हम कभी-कभी रस्सी को साँप समझ बैठते हैं। इस तरह भ्रांतिपूर्ण अनुभूतियों की व्याख्या लोकप्रिय वस्तुवाद के द्वारा नहीं हो सकती है।

लोकप्रिय वस्तुवाद की असफलता को देखकर दार्शनिकों ने उसमें संशोधन न करके बौद्धिक आधार पर वस्तुवाद को स्थापित करने का प्रयास किया है, जिसे दार्शनिक वस्तुवाद कहा जाता है। दार्शनिक वस्तुवाद के तीन रूप माने गये हैं-(१) प्रत्यय प्रतिनिधित्ववाद (२) नवीन वस्तुवाद (३) समीक्षात्मक वस्तुवाद।

15. मानव को जन्म तो मिल गया, लेकिन जीवन-यापन के लिये अर्थ की आवश्यकता होती है। सबसे प्रथम आवश्यकता तो भोजन की ही होती है। यह भोजन बिना रुपये-पैसे की व्यवस्था किये बिना तो संभव नहीं है। मानव जीवन की तीन मूलभूत आवश्यकताएँ हैं-रोटी, कपड़ा और मकान। इन तीनों ही मूलभूत आवश्यकताओं के लिए धान की आवश्यकता है। यह धान की आवश्यकता कुछ-न-कुछ व्यवसाय करके ही पूरी हो सकती है। व्यवसाय की भी कई श्रेणियाँ हैं- सरकारी व्यवसाय तथा निजी व्यवसाय।

धीरे-धीरे सभ्यता के विकास के साथ-साथ जनता की माँग बढ़ी जिस कारण नये-नये व्यवसायों ने जन्म दिया। ये व्यवसाय विभिन्न कार्यकुशलताएँ लिए हुए लोगों की माँग करने लगे। ये माँगें विभिन्न नये-नये व्यवसायिक पाठ्यक्रमों द्वारा पूरा की जाने लगी।

धर्म का पालन करते हुए अर्थ अर्थात् धान कमाना, यह शर्त भारतीय दर्शन में लगा दी गई ताकि यदि कोई व्यक्ति अनैतिक रूप से अर्थ कमाता है तो वह धर्म नहीं है।

जैन धर्म में तो बारह महासिद्धांतों के अंतर्गत कहा गया है कि गलत नाप-तौल का व्यापार में सहारा न लें।

प्रत्येक कार्य व्यापार में कुछ नैतिक मूल्य भी पाये जाते हैं। ये नैतिक मूल्य मानव को उसकी सीमा से बाहर नहीं जाने देते परंतु यदि आज के समय पर दृष्टिपात करें तो हम पायेंगे कि आज किसी भी विषय में नैतिक मूल्य नहीं रह गया है। बेईमानी, चोरी, फरेब, झूठ तो जैसे लक्ष्य की तरह से बन गये हैं। मानव को इस बात का डर ही नहीं है कि उसका कोई भी अनैतिक कृत्य उसे पतन के मार्ग पर ले जायेगा। हर व्यवसाय में मानो जैस कि विशेष रूप से बेईमानी करने के विशेष मार्ग हैं- बेईमान के विशेष हैं।

❑